



कर्नाटक सरकार

# हिंदी सुमन

## प्रथम भाषा हिंदी

**Hindi First Language**

**Part 2**



पाँचवीं कक्षा

**Fifth Standard**

**Karnataka Textbook Society (R.)**

6th Cross, Malleshwaram,  
Bengaluru - 560 003.

## अनुक्रमणिका

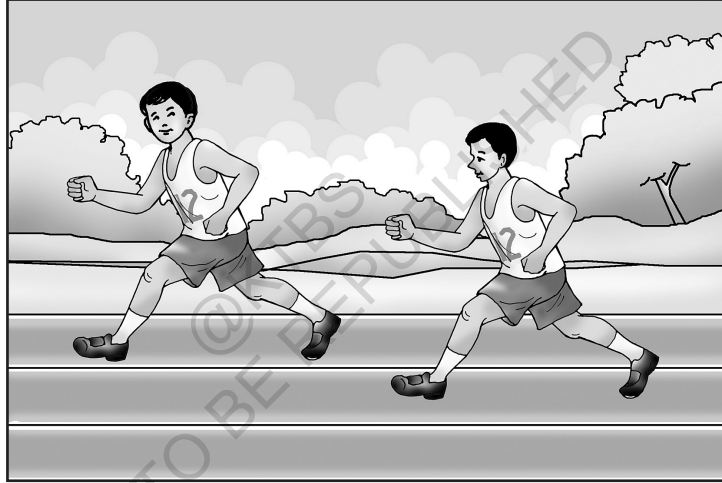


| क्र. सं. | शीर्षक             | विधा          | पृ.सं. |
|----------|--------------------|---------------|--------|
| 10       | मेरी ललक- उसकी चमक | कहानी         | 1      |
| 11       | कदंब का पेड़       | कविता         | 11     |
| 12       | श्रेष्ठ कौन ?      | कहानी         | 18     |
| 13       | सी. वी. रामन       | व्यक्ति परिचय | 27     |
| 14       | अलबेली घंटी        | कविता         | 35     |
| 15       | होली का त्योहार    | एकांकी        | 40     |
| 16       | वैभवशाली हंपी      | निबंध         | 50     |
| 17       | तुलसी के दोहे      | दोहा          | 58     |

## मेरी ललक- उसकी चमक

- श्रीमती कांता रानी मंजूषा

आशय : प्रस्तुत पाठ द्वारा बच्चों को संदेश मिलता है कि खेलों को स्पर्धात्मक भावना से खेलना चाहिए न कि ईर्ष्या की भावना से। कक्षा में छात्रों को एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए।



सुश्रुत! सुश्रुत!! सुश्रुत!!!

मैं कितनी कोशिश कर रहा था कि मैं सुश्रुत से अपना ध्यान हटा लूँ, पर मुझे बार-बार वही याद आ रहा था। मेरा ध्यान कल उसके लिए बजाई गई तालियों की ओर ही जा रहा था। कल का दिन मेरे लिए कितना बुरा था और सुश्रुत के लिए कितना अच्छा! कल विद्यालय का क्रीड़ा-दिवस था। मैं सौ मीटर की दौड़ में सुश्रुत को हराना चाहता था। कितना अभ्यास किया था मैंने। पी.ई. सर के हर आदेश का पालन किया था, फिर भी ऐसा क्यों हुआ? सौ मीटर की दौड़ के वे पल मेरे लिए इतने मनहूस क्यों बन गए? दौड़ समाप्त

होने के कुछ ही क्षण पहले सुश्रुत को हराने की ललक से मैंने पीछे पलटकर देखना चाहा कि सुश्रुत कितना पीछे है। सिर घुमाया तो देखा सुश्रुत बस एक कदम ही पीछे था। मेरा सिर घुमाना और... सुश्रुत का.... मुझे पार करके... आगे निकल जाना... बस एक पल में सब कुछ हो गया था।

“सर, मैं कितना तेज़ दौड़ा था, पर फिर भी हार गया। ऐसा क्यों हुआ सर?” मैंने आक्रोश और निराशा से भरकर पी.ई. सर से पूछा था।

“तुम्हारे हारने का सिर्फ एक ही कारण है मनीष, तुम्हारा लक्ष्य दौड़ जीतना नहीं, सुश्रुत को हराना था।”

पी.ई. सर की बात मेरी समझ में नहीं आई। हाँ, मैं सुश्रुत को हराना ही तो चाहता था। मैं इसी साल इस आवासीय विद्यालय की कक्षा पाँचवीं में भर्ती हुआ हूँ। मैं पढ़ने में बहुत अच्छा नहीं हूँ। जैसे-तैसे सभी विषयों में पास हो जाता हूँ। शुरुआती दिनों में जब मैंने सुश्रुत को कक्षा की लघु परीक्षाओं में सबसे अधिक अंक पाते देखा तो सोचा कहीं से नकल मारता होगा, पर कक्षा के दूसरे लड़कों से लगातार उसकी तारीफ़ सुनी कि सुश्रुत सिर्फ पढ़ने में ही नहीं, बल्कि खेलने में, ड्राइंग में, गाने में, हर बात में बहुत होशियार है। सभी शिक्षक हमेशा उसकी तारीफ़ करते रहते हैं तो अंदर ही अंदर मैं सुश्रुत को नापसंद करने लगा।

मुझे हमेशा लगता कि मैं सुश्रुत को किसी जगह कम या खुद को कहीं उससे अच्छा साबित करूँ।

कल की दौड़-स्पर्धा मेरे लिए काफी महत्वपूर्ण बन गई थी। दौड़ने में अच्छा होने के कारण मैं यहाँ सुश्रुत को हरा सकता था। मुझे अपने

अभ्यास पर भी बड़ा विश्वास था, पर उस समय सुश्रुत को पलटकर देखना मेरी सारी उम्मीदों पर पानी फेर गया। अब मैं हार गया हूँ, सिर्फ दौड़ में ही नहीं बल्कि अपने को सुश्रुत से बेहतर दिखाने की हर कोशिश में हार गया हूँ।

एक दिन गणित की कक्षा चल रही थी। मैं हमेशा की तरह किताब में आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचता हुआ पढ़ने का नाटक कर रहा था।

“मनीष” बीना मैडम की आवाज़ ने मुझे चौंका दिया।

“यस मैडम” मैं खड़ा हो गया।

“चलो, इधर आकर यह सवाल करो।” उन्होंने बोर्ड पर लिखा हुआ सवाल दिखाते हुए मुझसे कहा।



मैं बुरी तरह से फँस गया था। धीरे-धीरे चलते हुए मैं बोर्ड के पास गया। सब मेरी ओर देख रहे थे, सुश्रुत भी। कभी सीखा होता

तो करता! मुझे तो बिलकुल नहीं आ रहा था। मैं बोर्ड के पास चुपचाप सिर झुकाकर खड़ा रहा। सुश्रुत एक टक मेरी ओर देख रहा था। मैडम ने गुस्से से मुझे डाँटा और कहा - “इतना आसान सवाल नहीं कर सकते? कल मैं फिर पूछूँगी। नहीं किया तो सीधे प्रिंसिपल के पास ले जाऊँगी, समझे?”

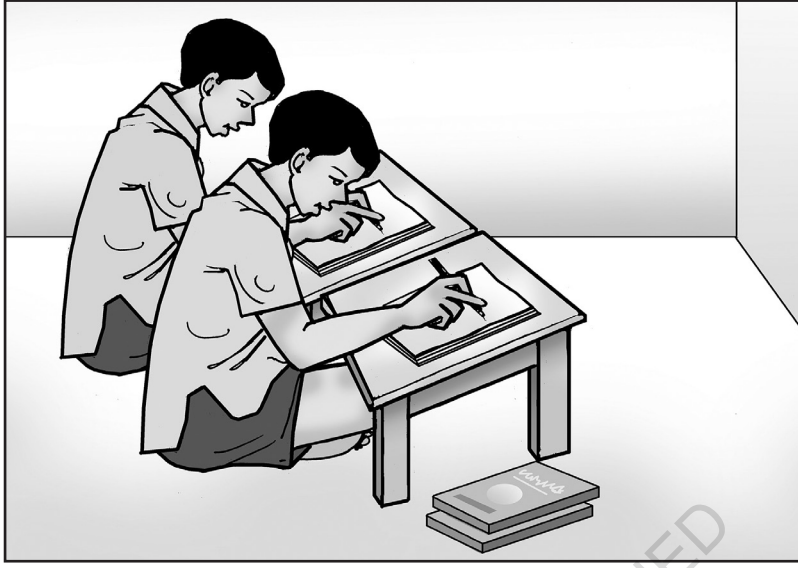
इतने में घंटी बजी। बीना मैडम गुस्से में चली गई। मैं अपनी सीट पर आकर बैठ गया। कक्षा के सब लड़के हँस रहे थे। सुश्रुत अब भी मेरी ओर देख रहा था। शाम को जब सब लोग पढ़ रहे थे तब सुश्रुत ने मुझ से पूछा, “इतना आसान सवाल क्यों नहीं किया?”

“आसान ? तुम्हारे लिए होगा। मेरे लिए तो कठिन ही था”। मैं ने बेरुखी से जवाब दिया।

“नहीं मनीष, वह सवाल आसान ही था। देखो ऐसे करते हैं।”

मैं सीखना नहीं चाहता था, पर मैडम की चेतावनी याद आई तो मज़बूरी में सीखने लगा। सुश्रुत मुझे समझाते हुए सवाल करता जा रहा था। फिर उसने मुझसे कहा कि मैं वैसे ही उसे समझाते हुए करूँ। मैं कहीं गलत करता तो वह मुझे ठीक करता। वह मेरा गुरु भी बना और शिष्य भी। बीना मैडम तैयार थीं, सवालों के साथ। पर आज मैं भी तैयार था, अपने हलों के साथ। मुझे सवाल हल करते देख बीना मैडम की आँखों में प्रशंसा थी। कक्षा के दूसरे लड़कों की आँखों में आश्चर्य भरी निराशा और सुश्रुत की आँखों में एक अनोखी चमक !

वार्षिक परीक्षा पास आयी थी। इस बार सुश्रुत ने मुझे नहीं छोड़ा। वह अपने साथ मुझे भी पढ़ने बिठा लेता। मेरा कोई भी बहाना नहीं चलता। पढ़ते समय आई मेरी हर कठिनाई को दूर करने के लिए वह हमेशा तैयार रहता। बार-बार मैं उसे बाधा पहुँचाऊँ, यह मुझे भी अच्छा नहीं लगता था।



जब परिणाम बताए गए तो मैं कक्षा में पाँचवें स्थान पर था। पूरी कक्षा ने मेरे लिए तालियाँ बजाईं। सुश्रुत की आँखों में मुझे बहुत प्यारी लगने वाली वही चमक थी। उन्हीं तालियों की आवाज में मैंने सुना, सुश्रुत फिर से अपने प्रथम स्थान पर है। इस बार कक्षा में सुश्रुत के लिए तालियाँ बजाने के लिए मेरे हाथ भी उठ गए।

अपने दोस्त के अभिवादन में।

अपने दोस्त के प्रति कृतज्ञता में।

अपने दोस्त को बधाई देते हुए !

### लेखिका परिचय :

श्रीमती कांता रानी मंजूषा हिंदी में शिक्षाप्रद कहानी रचने में प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत कहानी चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'गड बड़ झाला और अन्य कहानियाँ' नामक पुरस्कृत बाल-साहित्य से ली गयी है।

## शब्दार्थ :

कोशिश - प्रयत्न, मनहूस - अशुभ, ललक - इच्छा, तारीफ़  
- प्रशंसा, आवासीय - ठहरने की जगहवाला, निवासीय; होशियार  
- चालाक, चेतावनी देना - सावधान करना, अनोखी - अनुपम,  
आखिरी - अंतिम

## अभ्यास

### I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) विद्यालय का क्रीड़ा दिवस किसके लिए बुरा था ?
- २) किस खेल में सुश्रुत की जीत हुई ?
- ३) कक्षा के अन्य लड़के किसकी तारीफ़ करते थे ?
- ४) बीना मैडम कौन-सा विषय पढ़ाती थी ?
- ५) गणित की कक्षा में मनीष क्या कर रहा था ?
- ६) मनीष को परीक्षा में कौन-सा स्थान मिला ?

### II. इन प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में लिखिए :

- १) मनीष सुश्रुत से क्यों जलता था ?
- २) पी. ई. सर के विचार में मनीष की हार का कारण क्या था ?
- ३) पढ़ने के अलावा सुश्रुत और किन-किन विषयों में होशियार था ?
- ४) सुश्रुत ने मनीष को गणित के सवालों को हल करने का अभ्यास किस प्रकार कराया ?

### III. इन शब्दों के लिए विलोम शब्द लिखिए :

- १) दिन × ..... ५) नापसंद × .....  
२) हार × ..... ६) सवाल × .....  
३) पीछे × ..... ७) उपयोग × .....  
४) शुरुआत × ..... ८) तेज × .....

### IV. इन शब्दों के लिए अन्य वचन लिखिए :

- १) आँख - ..... १) रेखा - .....  
२) घंटी - ..... ६) याद - .....  
३) किताब - ..... ७) कदम - .....  
४) कक्षा - ..... ८) दिन - .....

V. दौड़-स्पर्धा एक मैदानी खेल है। अब आप अन्य कुछ मैदानी खेलों की सूची बनाइए।

### VI. खेलों को छाँटकर लिखिए :

वाॉलिबाल, तैरना, दौड़ना, क्रिकेट, बिलियर्ड्स, फुटबॉल, कबड्डी, एयरोबिक्स, छलांग मारना, हॉकी.

| व्यक्तिगत खेल | सामूहिक खेल |
|---------------|-------------|
|               |             |

## VII. उदाहरण के अनुसार लिखिए : (विश्वप्रसिद्ध - भारतीय)

उदा : शतरंज - विश्वनाथन् आनंद

१. दौडाक - \_\_\_\_\_
२. तैराक - \_\_\_\_\_
३. हॉकी - \_\_\_\_\_
४. बिलियर्ड्स - \_\_\_\_\_
५. शूटिंग - \_\_\_\_\_
६. बॉक्सिंग - \_\_\_\_\_

### भाषा-बोध

#### सर्वनाम :

विभा पाँचवीं कक्षा में पढ़ती है। उसके पिता डॉक्टर और माता अध्यापिका हैं। वे उसे बहुत प्यार करते हैं। वह एक मेधावी छात्रा है। पढ़ाई के साथ-साथ खेल में भी उसकी रुचि है।

यहाँ उसे, वह, उसकी आदि शब्द विभा के लिए आए हैं तथा वे शब्द विभा के पिता और माता के लिए प्रयुक्त हैं। ये सभी सर्वनाम शब्द हैं और संज्ञा की जगह पर आए हैं।

**संज्ञा के स्थान पर आनेवाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।**

सर्वनाम शब्द स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में समान रहते हैं। क्रिया से उनके स्त्री या पुरुष होने का पता चलता है। जैसे -

मैं खेल रहा हूँ।      मैं खेल रही हूँ।

सर्वनाम शब्दों के भी एकवचन तथा बहुवचन रूप होते हैं। जैसे -

|        |     |    |     |    |        |        |
|--------|-----|----|-----|----|--------|--------|
| एकवचन  | मैं | वह | तू  | यह | उसे    | इसे    |
| बहुवचन | हम  | वे | तुम | ये | उन्हें | इन्हें |

### सर्वनाम के भेद



↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓  
पुरुषवाचक अनिश्चयवाचक निश्चयवाचक प्रश्नवाचक संबंधवाचक निजवाचक

सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं। ये हैं -

भेद

उदाहरण

- १) पुरुषवाचक → मैं, हम, तुम, आप, यह, वह, ये, वे।
- २) निश्चयवाचक → यह, वह आदि।
- ३) अनिश्चयवाचक → कुछ, कोई, किन्हीं, किसी आदि।
- ४) प्रश्नवाचक → कहाँ, कौन, क्या आदि।
- ५) संबंधवाचक → जिसकी-उसकी, जैसा-वैसा, जो-सो आदि।
- ६) निजवाचक → अपना, खुद, स्वयं, अपने-आप आदि।

अब आपकी बारी :

I. कोष्ठक में से सही सर्वनाम शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

- क) ..... कौन-सी पुस्तक पढ़ रही हो ? (मैं, तुम)
- ख) वह बालक ..... पुत्र है? (किसका, किसकी)
- ग) ..... पटना में रहती हूँ। (वह, मैं)
- घ) ..... सब भारतीय हैं। (तुम, हम)
- ङ) ..... खेल रहे हैं। (वे, वह)

## II. सर्वनाम शब्द छाँटकर उसके भेद लिखिए :

- उदा : क) मैं लखनऊ जाऊँगा। मैं पुरुषवाचक सर्वनाम  
ख) दूध में कुछ पड़ गया है। .....  
ग) तुम क्या कर रही हो ? .....  
घ) वह माला का घर है। .....  
ङ) विनय कमरे की सफ़ाई खुद करेगा। .....

## III. दिए गए सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए :

- क) मैं - .....  
ख) तुम - .....  
ग) वे - .....  
घ) अपने - आप - .....

## योग्यता विस्तार :

- राज्य तथा राष्ट्र स्तर पर खिलाड़ियों को दिये जानेवाले पुरस्कारों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क होता है'-इसकी चर्चा कक्षा में कीजिए।



## कदंब का पेड़



- श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

आशय : प्रस्तुत कविता में बालक के प्रति माँ की ममता का सुंदर एवं सजीव चित्रण किया गया है और बच्चों के शरारती स्वभाव पर भी प्रकाश डाला गया है।

यह कदंब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना-तीरे,  
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।  
ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,  
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदंब की डाली।  
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता,  
उस नीची डाली से अम्मा, ऊँचे पर चढ़ जाता।  
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बाँसुरी बजाता,  
अम्मा-अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।



सुन मेरी बंसी को माँ तुम इतनी खुश हो जाती,  
मुझे देखने काम छोड़कर, बाहर तक तुम आती।  
तुमको आता देख बाँसुरी रख मैं चुप हो जाता,  
पत्तों में छिपकर धीरे-से फिर बाँसुरी बजाता।

गुस्सा होकर मुझे डाँटती, कहती - नीचे आ जा,  
पर जब मैं न उतरता हँसकर कहती - मुन्ना राजा!  
नीचे उतरो मेरे भैया! तुम्हें मिठाई दूँगी,  
नए खिलौने, माखन-मिसरी, दूध-मलाई दूँगी।

मैं हँसकर सबसे ऊपर की टहनी पर चढ़ जाता,  
एक बार कह (माँ) पत्तों में वहीं छुप जाता।  
बहुत बुलाने पर भी माँ, जब मैं न उतरकर आता,  
तब माँ, माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।

तुम आँचल पसारकर अम्मा, वहीं पेड़ के नीचे,  
ईश्वर से कुछ विनती करती, बैठी आँखें मीचे।  
तुम्हें ध्यान में लगा देख मैं धीरे - धीरे आता,  
और तुम्हारे फैले आँचल के नीचे छिप जाता।



तुम घबराकर आँख खोलती फिर भी खुश हो जाती,  
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पाती।  
इसी तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे-धीरे,  
माँ, कदंब का पेड़ अगर यह होता यमुना-तीरे।

### कवयित्री का परिचय :



आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की जानी-मानी कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् १९०४ ई. में इलाहाबाद जिले के निहालपुर गाँव में हुआ। इलाहाबाद में सन् १९२१ के असहयोग आंदोलन के प्रभाव में आकर इन्होंने अध्ययन को बीच में ही छोड़ दिया और सक्रिय राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया। इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा।

विवाह के बाद वे जबलपुर गईं। सन् १९४८ में एक मोटर दुर्घटना में इनका स्वर्गवास हुआ। सुभद्राकुमारी जी राष्ट्रीय चेतना की कवयित्री थी और इनकी भाषा सीधी, सरल तथा स्पष्ट एवं आइंबरहीन खड़ीबोली है। इनकी प्रमुख रचनाएँ : काव्य संग्रह-‘मुकुल’ और ‘त्रिधारा’ कहानी संकलन - ‘सीधे-सादे चित्र’, ‘बिखरे मोती’, ‘उन्मादिनी’ आदि हैं।

### शब्दार्थ :

कन्हैया - कृष्ण, तीर - तट, किनारा; विकल - व्याकुल,  
बेचैन, दुःखी; विनती - प्रार्थना, आँखें मीचे - आँखें बंद करके,  
माखन - मक्खन

## अभ्यास

### I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- १) बच्चे को पेड़ से नीचे उतारने के लिए माँ उसे क्या लालच दिखाती है?
- २) बच्चे के दिखाई न देने पर माँ उसे डाँटती है या 'मुन्ना राजा' कहकर पुकारती है?
- ३) माँ को ध्यान में लगा देखकर बच्चा क्या करता है?
- ४) इस कविता की कवयित्री कौन हैं?

### II. निम्नलिखित पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

सुन मेरी बंसी को माँ तुम ..... जाती,  
मुझे देखने काम छोड़कर, बाहर तक तुम .....।  
..... बाँसुरी रख .....,  
पत्तों में ..... फिर बाँसुरी बजाता।

### III. तुकांत शब्दों को लिखिए :

- |               |                |
|---------------|----------------|
| १) तीरे ..... | ४) आता .....   |
| २) नीचे ..... | ५) बजाता ..... |
| ३) जाती ..... |                |

### IV. अर्थ लिखकर, वाक्य में प्रयोग कीजिए :

तीरे - .....  
.....  
अम्मा - .....  
.....

.....  
माखन- .....  
.....  
स्वर - .....  
.....

V. कई बार अर्थ को स्पष्ट करने के लिए एक वस्तु की तुलना अन्य वस्तु से की जाती है।

उदा : राजकुमारी का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है। इसी तरह दिए हुए शब्दों में से ठीक शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए।  
(अमृत, फूल, रेशम, चीता, तवा, ताड़, पत्थर, हरिश्चंद्र, मोती, बरफ़)

- १) उसके बाल ..... जैसे मुलायम हैं।
- २) गंगाजल ..... के समान मीठा है।
- ३) वह ..... के समान लंबा है।
- ४) वह ..... जैसा सत्यवादी है।
- ५) सुहास ..... जैसा फुरतीला है।
- ६) वह बालक ..... सा कोमल है।
- ७) उसका हृदय ..... के समान कठोर है।
- ८) उसके दाँत ..... की तरह चमकते हैं।
- ९) अरे ! इसके हाथ तो ..... जैसे ठंडे हैं।
- १०) गरमियों में ज़मीन ..... के समान गरम हो उठती है।

## VI. कविता के सबसे मुख्य भाव पर ✓ लगाइए:

- १) बालक की शरारत
- २) खेल के प्रति प्यार
- ३) माँ का बेटे से प्यार

(तीनों उत्तर सही हैं पर आपको कौन-सा सबसे सही लगता है, उसी को कोष्ठक में लिखिए।)

### भाषा - बोध

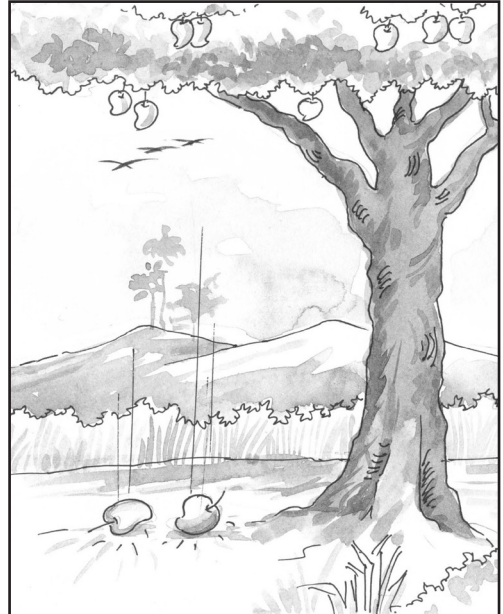
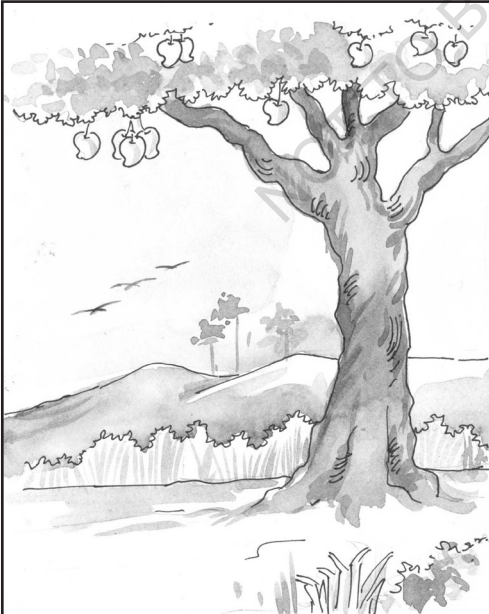
कारक :

शब्दों को एक साथ लिखने तथा बोलने से वाक्य नहीं बनते।

उदा : पेड़ फल लगे हैं या पेड़ फल गिरा। इस शब्द समूह से पता नहीं चलता कि क्या कहा जा रहा है। इन्हें हम ऐसे कहेंगे -

पेड़ पर फल लगे हैं।

पेड़ से फल गिरा।



यहाँ पेड़ के साथ 'पर' और 'से' लगे हुए हैं जिनसे वाक्यों के अर्थ स्पष्ट हो गये हैं। 'पर' और 'से' शब्द कारक चिह्न हैं क्योंकि ये संज्ञा को क्रिया से जोड़ते हैं।

वाक्यों में संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का क्रिया के साथ संबंध बतानेवाले शब्द रूप कारक कहलाते हैं। कारक के चिह्न को विभक्ति या 'परसर्ग' कहते हैं।

**कारक के भेद :**

कारक आठ होते हैं। इनके चिह्न इस प्रकार हैं :

|    | कारक     | चिह्न      |
|----|----------|------------|
| १. | कर्ता    | ने         |
| २. | कर्म     | को         |
| ३. | करण      | से, द्वारा |
| ४. | संप्रदान | को, के लिए |
| ५. | अपादान   | से         |
| ६. | संबंध    | का, के, की |
| ७. | अधिकरण   | में, पर    |
| ८. | संबोधन   | हे!, अरे!  |

अब आपकी बारी :

१) इन पंक्तियों में कारक चिह्नों को रेखांकित कीजिए। फिर उन्हें अलग से लिखिए :

यह कदंब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना तीरे  
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।  
ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,  
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदंब की डाली।

२) इस पूरी कविता में कल्पना की गई है कि 'ऐसा हो जाता तो वैसा होता!'

आप भी ऐसे पाँच वाक्य बनाइए जिनका ऐसा ही अर्थ निकले।  
उदाहरण के लिए - अगर मैं परिश्रम करती, तो कक्षा में प्रथम आ जाती।

अनुमान तथा कल्पना :

कविता में बालक के प्रति माँ की ममता चित्रित है। आपने गौर किया होगा कि मनुष्य, पशु, पक्षी इन सभी जातियों में माँ अपने बच्चों का पूरा-पूरा ध्यान रखती है। प्रकृति की इस अद्भुत देन का अवलोकन कर अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार :

- एक सुंदर-सा कदंब के पेड़ का चित्र बनाएँ, जिसमें फल भी लगे हों। फिर उसमें माँ और बच्चे का चित्र बनाकर इस कविता का जो पद आपको अच्छा लगता हो, उसे लिखिए।
- श्री कृष्ण के बचपन की घटनाओं को अपने बड़ों से जानकर लिखिए।
- कविता में वर्णित घटना को ध्यान में रखकर सोचिए कि आजकल बालक अपनी माँ के साथ कैसे खेलते हैं ?



## श्रेष्ठ कौन ?



- श्रीमती पूजा सिंघवी

आशय : उपनिषद् पर आधारित प्रस्तुत कथा द्वारा बालकों को यह शिक्षा मिलती है कि संसार में कोई भी परिपूर्ण नहीं होता। सभी का अपना-अपना महत्व होता है। अहंकार की भावना ठीक नहीं। मिल-जुलकर रहने में ही सबका हित होता है।

शरीर निष्क्रिय पड़ा था। इन्द्रियों को भी कुछ काम-काज नहीं था। प्राण और मन भी बैठे आराम कर रहे थे। ऐसे में समय बिताने के लिए वाणी, चक्षु और श्रवण में गप्प-गोष्ठी होने लगी। प्राण और मन भी दूर बैठे-बैठे बातें सुनने लगे।

बात ही बात में बात बढ़ गई।

वाणी ने चक्षु से कहा, 'मैं तुझसे श्रेष्ठ हूँ।'

चक्षु ने कहा, 'जा, जा ! बड़ी श्रेष्ठ बनने वाली आई। श्रेष्ठ तो मैं हूँ !' श्रवण ने कहा, 'अरे! आप दोनों व्यर्थ झगड़ रहे हैं। मैं न होऊँ

तो आपको एक दूसरे की बात भी न सुनाई पड़े। इसीलिए आप दोनों से श्रेष्ठ तो मैं हूँ।' दूर बैठे मन ने कहा, 'तुम लोग व्यर्थ ही झगड़ते हो! तुम सब तो साधन मात्र हो। वास्तव में सबसे श्रेष्ठ तो मैं हूँ।'



प्राण ने मन को टोकते हुए कहा, 'मन ! यदि ये सब साधन हैं, तो तू क्या है? तू साध्य कब से हो गया?'

मन ने प्राण से कहा, 'तो क्या तू हम सबसे श्रेष्ठ है?'

प्राण ने कहा, 'मैंने ऐसा तो कहा नहीं !'

देखते-ही-देखते झगड़ा बहुत बढ़ गया। कोई भी अपने को कम मानने के लिए तैयार नहीं था।

अन्ततः वे सब मिलकर निर्णय करवाने के लिए भगवान के पास पहुँचे और बोले, 'हे प्रजापति ! आप यह निर्णय कर दीजिए कि हम पाँचों में से श्रेष्ठ कौन है।'



भगवान यह सुनकर मुस्कुराए। बोले, 'इतनी सी बात के लिए इतनी दूर आने की क्या आवश्यकता थी? इसका निर्णय तो तुम लोग आपस में ही कर सकते थे।'

'लेकिन हमें निर्णय करना नहीं आता। इसीलिए तो आपके पास आए हैं।'

'निर्णय करने की विधि मैं तुम्हें बता देता हूँ। सुनो, श्रेष्ठ वह होता है, जिसके बिना काम ही न चले। अब तुम लोग जाओ और स्वयं परीक्षा करके निर्णय कर लो।' भगवान ने कहा।

पाँचों को जगत् पिता भगवान की बात अच्छी लगी। वे सन्तुष्ट होकर लौट आए। शरीर तो अभी भी निठल्ला सोया पड़ा था। सब शरीर में अपने-अपने स्थान पर चुपचाप जा बैठे।

परीक्षा का दिन निश्चित किया गया। निश्चित समय पर परीक्षा शुरू हुई। झगड़ा वाणी ने ही शुरू किया था, इसलिए उसी से परीक्षा भी शुरू हुई।

वाणी कहने लगी, 'जगत् पिता ने कहा है कि श्रेष्ठ वह होता है जिसके बिना काम न चले। अभी मैं तुम्हे छोड़कर चली जाऊँ तो तुम सबका काम ठप हो जाएगा। इसलिए सीधी तरह से मुझे श्रेष्ठ मान लो, नहीं तो मैं यहाँ से चली।'।

वाणी समझती थी सब उससे रुक जाने की प्रार्थना करेंगे।

लेकिन किसी ने उसकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा। वाणी उन्हें छोड़कर चली गयी। उसने सोचा एक-दो दिन में सबके दिमाग ठिकाने आ जाएँगे और दौड़े-दौड़े उसे मनाने के लिए आयेंगे। लेकिन एक महीना बीत गया, कोई भी मनाने नहीं आया। वाणी ने सोचा, चलकर देखना चाहिए कि उन लोगों के क्या हाल हैं ? बेचारों की दुर्गति हो रही होगी।

लेकिन यह क्या ! वाणी ने देखा, चारों आनंदमग्न हैं। चारों ऐसे बैठे थे जैसे मौन लिए मुनि बैठे हो। जो काम वह किया करती थी वे संकेत से हो रहे थे। उसने आते ही उनसे पूछा, 'कैसे हो? कैसी कटी मेरे बिना?'

'बहुत अच्छी तरह रहे। खूब अच्छी कटी। यह समझ में आ गया कि सब झगड़ों की जड़ तू ही है।'

वाणी यह सुनकर चुप हो गई और चुपचाप अपनी जगह जा बैठी।

इसके बाद चक्षु ने खड़े होकर कहना शुरू किया, 'आप को जो कुछ दिखाई देता है सब मेरी वजह से। यह जगत् अच्छा लगता है तो मेरी वजह से। वाणी के बिना तो काम चल सकता है पर मेरे बिना नहीं। मेरे महत्व को समझकर ही विधाता ने जीभ तो एक दी, पर चक्षु दो दिए हैं। इतना जानकर भी यदि आप मेरी श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं आपको छोड़कर अभी चला जाऊँगा।'

वाणी तो चिढ़ी हुई बैठी थी। उससे नहीं रहा गया। उसने कहा, 'जाना है तो जा, तुझे रोकता कौन है ?'

चिढ़कर चक्षु अपना महत्व जताने के लिए चल दिया। उसने सोचा, कुछ दिन अंधेरे में ठोकें खायेंगे फिर झख मारकर मुझे मनाने आ जाएंगे।

लेकिन यह क्या ? दो महीने बीत गए और कोई भी चक्षु को बुलाने नहीं आया। हारकर चक्षु को ही लौटना पड़ा। उसने देखा कि वे लोग खूब मजे से रह रहे हैं और आँख का सब काम कान से ले रहे हैं।

चक्षु को समझ में आ गया कि उसके बिना उनका काम चल गया। फिर भी अपना महत्व जताने के लिए उसने कहा, 'आ गई न इतने दिनों में अकल ठिकाने?'

'हमारी अकल तो ठिकाने ही थी। तुम्हारी नहीं थी सो अवश्य ठिकाने पर आ गई है। बड़ी शांति मिली, बड़ा आराम मिला हमें तो। वैसा ही जैसा जीवधारियों को रात में मिलता है।'

यह सुनकर चक्षु भी चुपचाप यथास्थान जा बैठा।

अब श्रवण की बारी थी। उसने खड़े होकर कहा, 'भगवान ने चक्षु दो दिए, तो कान भी दो दिए। जब चक्षु चले गए तब आपने मेरी

मदद से काम चलाया। यह वास्तविकता है। इसलिए मेरी श्रेष्ठता स्वीकार कर लीजिए। इसी में आपका भला है। नहीं तो मैं अब चला।’

‘जाइए, आप भी शौक से जाइए!’ वाणी और चक्षु ने कहा।

चार-छः महीने तक जब किसी ने श्रवण की सुध नहीं ली तो वह भी थक-हारकर स्वयं लौट आया। उसने देखा कि उसकी कमी किसी को नहीं खटकी। उसे आया हुआ देखकर किसी ने उसे ‘आइए!’ भी नहीं कहा। वह भी चुपचाप यथास्थान जा बैठा।

अब मन की बारी थी। मन ने कहा, ‘भाईयो और बहनो, अपने मुँह से अपनी बड़ाई शोभा नहीं देती। बिना कुछ कहे, मैं आप लोगों को छोड़कर चला जाता हूँ। मैं जानता हूँ कि आप लोग मेरे बिना नहीं रह सकते। अपनी भूल समझ में आते ही आप मुझे बुला लीजिए। व्यर्थ कष्ट मत उठाइए।’

जो परीक्षा दे चुके थे वे एक साथ बोल उठे, ‘धन्यवाद! आप हमारी चिंता किये बिना जहाँ जाना हो, निश्चिंत होकर चले जाइए।’

मुँह फुलाए मन चला गया। दिन, सप्ताह, पक्ष और महीने बीतने लगे। कोई भी उसे बुलाने नहीं आया। आखिर वह स्वयं ही इठलाता हुआ लौट आया। देखता क्या है कि वे चारों उसी आनंद से हिलमिल कर खेल रहे हैं, जिस आनंद से नन्हे-मुन्ने खेला करते हैं। न कोई चिंता, न भय, न शोक ! मन समझदार था। बिना कुछ पूछे अपने स्थान पर जा बैठा।

अब प्राण की बारी थी। वह प्रारंभ से धीर, गंभीर और मौन था। उसका बर्ताव वैसा ही था जैसा छोटे बहन-भाइयों के साथ बड़े भाई का होता है। वह न तो स्पर्धा के लिए तैयार हुआ और न कुछ बोला।

यह देखकर चारों ने उसे उकसाना शुरू किया।

प्राण ने कहा, 'भाई, अब जाने भी दो। झगड़े से क्या लाभ? मैं अपने आपको श्रेष्ठ कहलाना भी नहीं चाहता।'

सब ने कहा, 'नहीं, ऐसे नहीं चलेगा। आपको भी श्रेष्ठता का प्रमाण देना होगा।'

'अच्छा ! तो लो प्रमाण।' यह कहते हुए प्राण जाने के लिए तैयार हुआ। अभी वह खड़ा ही हुआ था कि वाणी लुप्त होने लगी, आँखों में अँधेरा छा गया, कान बहरे हो गए और मन तो डावाँडोल हो गया।

सब एक साथ चीख उठे, 'बस, बस ! हम मान गए। आप हम सबमें श्रेष्ठ हैं। कृपया आप हमें छोड़कर मत जाइए।'

### लेखिका परिचय :

श्रीमती पूजा सिंघवी हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका हैं। आपने बच्चों के लिए 'उपनिषद की सचित्र कहानियाँ' शीर्षक पुस्तक में उपनिषद के जीवन मूल्यों को सरल, सहज तथा सरस भाषा में प्रस्तुत किया है।

### शब्दार्थ :

इंद्रियाँ - शरीर के अंग, ठप - बंद, चक्षु - आँख, वाणी - बोल, वचन; लुप्त - गायब, डावाँडोल - अधीर, श्रवण - कान, व्यर्थ - बेकार, निठल्ला - निकम्मा.

## अभ्यास

### I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :

- १) गप्प-गोष्ठी किसके बीच में होने लगी ?
- २) 'श्रेष्ठ कौन' के निर्णय के लिए सभी किसके पास गये ?
- ३) चक्षु ने अपना महत्व जताने के लिए क्या सोचा ?
- ४) प्राण का बर्ताव कैसा था ?
- ५) अंत में किसे श्रेष्ठ माना गया ?

### II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

- १) 'श्रेष्ठ कौन' की स्पर्धा किनके बीच हुई ?
- २) वाणी ने अपने विचारों को कैसे व्यक्त किया ?
- ३) चक्षु का वादा क्या था ?
- ४) प्राण निकलने के बाद शरीर के अंगों की क्या स्थिति हुई ?

### III. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(अकल, निष्क्रिय, हम मान गए, वाणी, भाइयो - बहनो)

- १) शरीर ..... पड़ा था।
- २) मन ने कहा, ..... और .....,  
अपने मुँह से अपनी बड़ाई शोभा नहीं देती।
- ३) हमारी ..... तो ठिकाने ही थी।
- ४) झगड़ा ..... ने शुरू किया था।
- ५) बस, बस ! .....। आप हम सबमें श्रेष्ठ हैं।

#### IV. उदाहरण के अनुसार अन्य अंगों के कार्य लिखिए :

उदाहरण : चक्षु से देखते हैं।

- १) कर्ण से .....।
- २) मुख से .....।
- ३) नासिका से .....।
- ४) हस्त से .....।

#### V. विलोम शब्द लिखिए :

- १) बहुत ×
- २) भला ×
- ३) आरंभ ×
- ४) श्रेष्ठ ×
- ५) भय ×

#### VI. अन्य वचन रूप लिखिए :

- |                 |                     |
|-----------------|---------------------|
| १) आँख - .....  | ४) मान्यता - .....  |
| २) चीज़ - ..... | ५) परीक्षा - .....  |
| ३) बात - .....  | ६) आवश्यकता - ..... |

**VII. सही वाक्य के सामने ✓ और गलत के सामने × चिह्न लगाइए :**

१) भगवान ने मानव को तीन चक्षु और एक कान दिया है।



२) वाणी सबसे श्रेष्ठ है।



३) शरीर निष्क्रिय होने लगा।



४) अंत में वाणी को श्रेष्ठ माना गया।



**VIII. नमूने के अनुसार लिखिए :**

नमूना: दिन + इक → दैनिक

१) सप्ताह + इक →

२) पक्ष + इक →

३) मास + इक →

४) वर्ष + इक →

**योग्यता विस्तार :**

- मुखौटे पहनकर इस कहानी के भाव को अपनी कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।



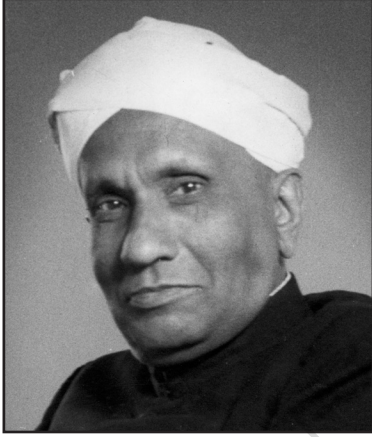
सी. वी. रामन



- संकलित

आशय : आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों में भारत रत्न सर श्री चंद्रशेखर वेंकटरामन का नाम बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। इस पाठ में उनकी संक्षिप्त जीवनी दी गई है।

श्री रामन का जन्म ७ नवंबर, १८८८ में तमिलनाडु के तिरुच्चिरापल्ली जिले में हुआ था। उनके पिता श्री चंद्रशेखर अय्यर एक कॉलेज में भौतिकी व गणित के अध्यापक थे। उनकी माताजी संस्कृत की विदुषी थीं। इस प्रकार विद्वान माता-पिता के संरक्षण में रामन का बौद्धिक विकास हुआ। अपनी प्रखर बुद्धि और प्रतिभा के कारण ही उन्होंने बारह वर्ष की आयु से पहले ही मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली थी। उसके पश्चात् रामन ने चेन्नई के प्रसिद्ध प्रेसिडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिए और वहीं से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। भौतिक विज्ञान में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के कारण उन्हें स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। इसीका परिणाम था कि उन्होंने एम. ए. में भी भौतिक विज्ञान को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया।



रामन की प्रारंभ से ही ध्वनि विशन में विशेष रुचि थी। एम.ए. करते हुए उन्होंने 'ध्वनि' तथा 'प्रकाश' के फैलाव पर प्रयोग करना प्रारंभ किया। उन्होंने अपने प्रयोग से सिद्ध किया कि जब प्रकाश विविध प्रकार की पारदर्शी और अपरादर्शी वस्तुओं से गुज़रता है तो उसकी तरंगों पर भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

रामन कोलकत्ता में एक उच्च सरकारी पद पर कार्य कर रहे थे, फिर भी उनका मन वैज्ञानिक अनुसंधान के लिये बेचैन था। वे भारतीय विज्ञान विकास एसोसियेशन में अपने खाली समय में विज्ञान संबंधी अनुसंधान और शोधकार्य करने लगे। वहाँ उनके द्वारा लिखे अनेक शोधपत्र प्रकाशित होने लगे।

सन् १९१९ में कोलकत्ता विश्वविद्यालय की ओर से भौतिक विज्ञान विभाग में सी.वी. रामन को प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया गया। यद्यपि उन्हें इस पद पर सरकारी नौकरी से कम ही वेतन मिलता था परंतु यह कार्य उनकी रुचि का था। इसलिए उन्होंने प्रोफेसर का पद सहर्ष स्वीकार कर लिया।

इसी विश्वविद्यालय में रहकर प्रकाश और ध्वनि विज्ञान में मौलिक अनुसंधान कार्य किए। उनकी सबसे बड़ी खोज थी 'रामन-प्रभाव' जो उन्हीं के नाम से जानी जाती



है। इसी खोज के कारण १९३० में उन्हें 'नोबेल पुरस्कार' से अलंकृत

किया गया। रामन भारत के पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने भारत में ही पढ़ाई करने के बाद शोधकार्य किया और नोबल पुरस्कार प्राप्त किया।

रामन विश्वविख्यात वैज्ञानिक थे। १९२९ में वे भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। इटली के विज्ञान परिषद् ने भी उन्हें सम्मानित किया। इंग्लैंड की रॉयल सोसाइटी ने भी पदक प्रदान किया और अपना 'फैलो' बनाया। ब्रिटिश सरकार ने 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया।

भारत सरकार ने १९५४ में उन्हें भारत के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। भारत में हर वर्ष २८ फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन 'रामन प्रभाव' की खोज विश्व के सम्मुख प्रस्तुत की गई थी। भौतिक विज्ञान की सेवा करते-करते सन् १९७० में सर रामन का देहांत हुआ। परंतु उनकी कृतियाँ और अनुसंधान आज हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं और करती रहेंगी।

### शब्दार्थ :

मैट्रिक - दसवीं कक्षा, पश्चात् - बाद, रुचि - इच्छा, आसक्ति;  
शोधपत्र - किसी विषय पर पर्याप्त अनुसंधान के बाद लिखा गया लेख  
या पत्र, अनुसंधान - खोज, अन्वेषण; मौलिक - जो किसी की नकल  
या आधार पर न हो, असली।

## अभ्यास

### I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) सर सी.वी. रामन का जन्म कहाँ हुआ?
- २) उनके पिता का नाम क्या था?
- ३) एम.ए. में उनके अध्ययन का मुख्य विषय क्या था?
- ४) रामन अपने खाली समय में क्या करते थे?
- ५) ब्रिटिश सरकार से उनको कौन-सी उपाधि मिली?

### II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) रामन के माता-पिता का परिचय लिखिए?
- २) रामन की बी.ए. तथा एम.ए. की पढ़ाई के बारे में लिखिए।
- ३) रामन ने अपने प्रयोग द्वारा क्या सिद्ध किया?
- ४) रामन को 'नोबेल पुरस्कार' से क्यों अलंकृत किया गया?
- ५) भारत में हर वर्ष 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' कब मनाया जाता है? क्यों?

### III. रिक्त स्थान भरिए :

- १) माता-पिता के संरक्षण में रामन का \_\_\_\_\_ विकास हुआ।
- २) अपनी प्रखर बुद्धि और \_\_\_\_\_ के कारण उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली थी।

३) रामन की प्रारंभ से ही \_\_\_\_\_ में विशेष रुचि थी।

४) रामन \_\_\_\_\_ में एक उच्च सरकारी पद पर कार्य कर रहे थे।

#### IV. जोड़ी मिलाइए :

- |             |                                    |
|-------------|------------------------------------|
| १) सन् १८८८ | नोबेल पुरस्कार                     |
| २) सन् १९१९ | भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष |
| ३) सन् १९३० | रामन का देहांत                     |
| ४) सन् १९२९ | रामन का जन्म                       |
| ५) सन् १९५४ | प्रोफेसर का पद                     |
| ६) सन् १९७० | 'भारत रत्न' का सम्मान              |

#### V. वाक्य में प्रयोग कीजिए :

- १) अध्यापक २) पश्चात् ३) सर्वाधिक ४) विश्वविख्यात ५) मार्गदर्शन

#### VI. अन्य वचन रूप लिखिए :

१) प्रतिभा -

२) परीक्षा -

३) वस्तु -

४) विद्या -

## VII. पाँच पारदर्शी तथा पाँच अपारदर्शी वस्तुओं की सूची बनाइए:

पारदर्शी

अपारदर्शी

जैसे - काँच

पत्थर

१.

२.

३.

४.

५.

VIII. भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट साधना के लिए अनेक महान् व्यक्तियों को नोबेल पुरस्कार से अलंकृत किया गया है। आप ऐसे पाँच व्यक्तियों के नाम उनके साधना क्षेत्र के साथ लिखिए :

व्यक्ति का नाम

साधना-क्षेत्र

जैसे : सी.वी. रामन

भौतिक-विज्ञान का क्षेत्र

१.

२.

३.

४.

५.

## भाषा-बोध

‘उपसर्ग’ एवं ‘प्रत्यय’ :

वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों से अन्य शब्द भी बनाए जाते हैं। मूल शब्दों में पहले या बाद में कुछ शब्दांश जोड़कर हम नए शब्द बनाते हैं। इससे शब्दों के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है।

जैसे - सु + पुत्र = सुपुत्र



वन



उपवन

ऊपर के चित्रों द्वारा मालूम होता है कि वन शब्द के पहले ‘उप’ लगाने पर उसका अर्थ बदल गया है।

किसी शब्द के पहले लगकर अर्थ बदलनेवाले शब्दांश ‘उपसर्ग’ कहलाते हैं।

|        |        |        |           |
|--------|--------|--------|-----------|
| जैसे - | उपसर्ग | शब्द   | नवीन शब्द |
|        | अ +    | शांति  | अशांति    |
|        | उप +   | मंत्री | उपमंत्री  |
|        | दुः +  | बल     | दुर्बल    |
|        | सु +   | कन्या  | सुकन्या   |
|        | कम +   | ज़ोर   | कमज़ोर    |
|        | ना +   | समझ    | नासमझ     |

इसी प्रकार अन्य शब्द हैं -

एक + ता = एकता, लेख + क = लेखक

यहाँ शब्द के अंत में 'ता' और 'क' लगाने से अर्थ बदल गया है।

शब्द के अंत में लगकर अर्थ बदलनेवाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

जैसे -

| शब्द    | प्रत्यय | नवीन शब्द |
|---------|---------|-----------|
| बुरा +  | ई       | बुराई     |
| कथा +   | कार     | कथाकार    |
| भारत +  | ईय      | भारतीय    |
| बच्चा + | पन      | बचपन      |
| सफल +   | ता      | सफलता     |
| बूढ़ा + | पा      | बुढ़ापा   |

अब हम जान गए :

- \* शब्द के पहले लगकर अर्थ बदलनेवाले शब्दांश 'उपसर्ग' कहलाते हैं।
- \* शब्द के अंत में लगकर अर्थ बदलनेवाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं।
- \* उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाये जा सकते हैं।

योग्यता विस्तार :

- भारत देश के अन्य महान् वैज्ञानिकों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।



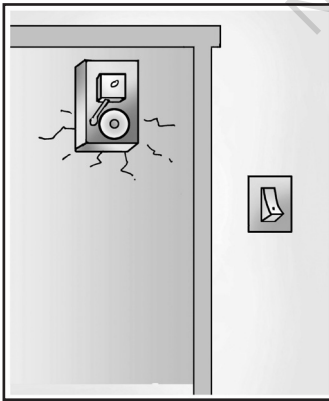


## अलबेली घंटी

- श्रीमती रेखा राजवंशी

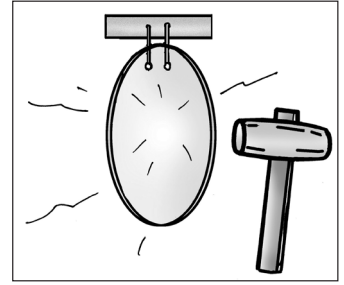
आशय : घंटी अनोखी होती है। वह घर में बजती है तो किसी के आने की सूचना देती है। विद्यालय में बजती है तो दिनचर्या बताती है। 'फोन' में बजती है और संदेशा पहुँचाती है। साइकिल में बजकर लोगों को सावधान करती है। मंदिर में बजती है तो भक्ति भाव जगाती है। अफसर के कमरे में बजती तो अपना ठाट-बाट दिखाती है।

मैं हूँ इक अलबेली घंटी,  
सबकी बनी सहेली घंटी।  
जब देखो तब बजती रहती,  
नई बात कुछ कहती रहती।



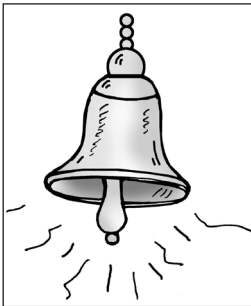
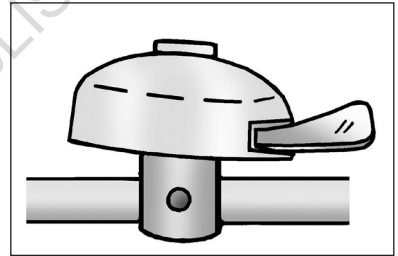
जब भी मैं घर में बजती हूँ,  
कोई आया ये कहती हूँ।  
लोगों में उत्साह जगाती,  
चेहरे पर मुस्कान खिलाती।

विद्यालय में जब बज जाती,  
दिनचर्या को शुरू कराती।  
अनुशासन का पाठ पढ़ाती,  
संध्या को छुट्टी करवाती।



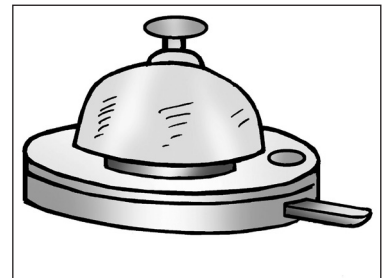
जब भी बजती फोन की घंटी,  
दौड़ के आते गुड़्डू, बंटी।  
नया संदेश लाती हूँ मैं,  
सबका मन हर्षाती हूँ मैं।

साइकिल की घंटी बजती है,  
हटो किनारे, यह कहती है।  
बीच सड़क न चलना भाई,  
घंटी ने यह बात बताई।



मंदिर की जब घंटी बोले,  
सुनकर भक्तों के मन डोले।  
करें आरती का जब गान,  
घंटी की बढ़ जाती शान।

मेज पे अफसर की बैठी है।  
इसीलिए तो ये ऐंठी है।  
सब पर अपना रौब चलाती,  
बजकर अंदर लोग बुलाती।





घड़ी की घंटी बजती जाती,  
मुन्नी मम्मी पर झल्लाती।  
उठो-उठो यह हमें बताती,  
आलस छोड़ो यह सिखलाती।

काम बहुत - से आती घंटी,  
इसीलिए इतराती घंटी।  
लगती कभी पहेली घंटी,  
सबकी बनी सहेली घंटी।

### कवयित्री परिचय :

श्रीमती रेखा राजवंशी एक अध्यापिका हैं। इन्होंने मनोविज्ञान तथा शिक्षा-विज्ञान में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की है। ऑस्ट्रेलियन बालभारती विद्यालय, थार्नले में इन्होंने आठ साल तक काम किया। रेखाजी एस.बी. एस. रेडियो में अनौपचारिक प्रचारिका हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने अनुवादक का काम भी किया है।

### शब्दार्थ :

अलबेली - निराली, अनोखी, छबीली; दिनचर्या - दैनिक कार्य,  
ऐंठ - घमंड, रौब - दर्प, झल्लाना - गुस्सा करना, इतराना - गर्व  
दिखाना

## अभ्यास

### I. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

- १) घर की 'कॉलिंगबेल' हमें क्या सूचना देती है ?
- २) 'फोन' की घंटी बजते ही कौन-कौन दौड़कर आते हैं?
- ३) मंदिर की घंटी की शान कब बढ़ जाती है ?
- ४) कौन-सी घंटी अपना रौब चलाती है ?
- ५) मम्मी पर कौन झल्लाती है ?

### II. तीन चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) आप कितने प्रकार की घंटियों के बारे में जानते हैं ?
- २) घंटी से हमें क्या लाभ है ?

### III. जोड़कर लिखिए :

|    | अ                      | ब                        |
|----|------------------------|--------------------------|
| १) | नया संदेश लाती हूँ मैं | इसीलिए इतराती घंटी।      |
| २) | साइकिल की घंटी बजती है | सबका मन हर्षाती हूँ मैं। |
| ३) | करें आरती का जब गान    | सबकी बनी सहेली घंटी।     |
| ४) | काम बहुत से आती घंटी   | हटो किनारे, यह कहती है।  |
| ५) | लगती कभी पहेली घंटी    | घंटी की बढ़ जाती शान।    |

### IV. कविता कंठस्थ कीजिए ।

### V. कविता से तुकांत शब्दों को पहचानकर लिखिए :

जैसे:      बजती      -      कहती

१)      जगाती      -      \_\_\_\_\_

- २) \_\_\_\_\_ - कराती  
 ३) घंटी - \_\_\_\_\_  
 ४) \_\_\_\_\_ - हर्षाती  
 ५) बजती - \_\_\_\_\_  
 ६) \_\_\_\_\_ - बताई  
 ७) \_\_\_\_\_ - डोले  
 ८) गान - \_\_\_\_\_  
 १०) \_\_\_\_\_ - बुलाती  
 ११) जाती - \_\_\_\_\_  
 १२) \_\_\_\_\_ - सिखलाती  
 १३) आती - \_\_\_\_\_  
 १४) \_\_\_\_\_ - सहेली

VI. घड़ी की घंटी सुनकर कभी आप खुश होते हैं, कभी गुस्सा करते हैं। इसके दो-दो कारण बताइए :

|              |                  |
|--------------|------------------|
| खुश होते हैं | गुस्सा करते हैं। |
|--------------|------------------|

१.

१.

२.

२.

VII. विद्यालय में अपनी दिनचर्या के बारे में चार-पाँच वाक्य लिखिए।

योग्यता विस्तार :

- विभिन्न प्रकार की घंटियों के चित्र खींचिए और उनके बारे में एक-एक वाक्य लिखिए।



## होली का त्योहार

-संकलित



आशय : भारत त्योहारों का देश है। यहाँ मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। प्रस्तुत पाठ में “होली” के पौराणिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परंपरा पर प्रकाश डाला गया है।

रचना : दादाजी, दादाजी, आपके कपड़े तो रंग-बिरंगे हो रहे हैं और मुँह पर भी गुलाल लगा है। आज तो होली नहीं है।

राकेश : होली सिर्फ एक दिन का त्योहार थोड़े ही है। कई दिन पहले से रंग डालने लगते हैं।

दादाजी : भाई, आज अपने मित्र लाला दर्शनलाल के यहाँ ‘होली मिलन समारोह’ था। खूब गाजे-बाजे, ढोल-ढमाके, झाँझ-मंजीरे और नाच-रंग जमा। पीने को बादाम की ठंडाई और खाने को बढ़िया मिठाई! मुझे तो यही अफसोस रहा कि तुम दोनों को साथ नहीं ले गया।

रचना : कोई बात नहीं दादाजी, हम भी अपने यहाँ एक दिन होली का कार्यक्रम क्यों न रखें!

दादाजी : हाँ-हाँ, अवश्य रख लेते हैं और उस दिन सभी पड़ोसियों और मित्रों को बुला लेंगे।

राकेश : दादाजी, मेरी किताब में चीन देश के यात्री फाँहियान के बारे में चर्चा है। फाँहियान यहाँ आया तो उन दिनों यहाँ बसंत का मौसम था। उसने लिखा है-‘भारत बड़ा अनोखा देश है।’



यहाँ तो लोग आए दिन नाचते-गाते और ढोल बजाते हैं। एक-दूसरे पर फूलों का रंग डालते हैं और झ्र छिड़कते हैं। मुँह पर रोली-अबीर मलते हैं। स्त्री-पुरुषों की इन मस्त टोलियों को देखकर मन करता है, मैं भी इनमें शामिल हो जाऊँ।’

रचना : फाँहियान ने जरूर होली खेली होगी ?

दादाजी : होली न खेलता, तो असली आनंद भी कैसे आता! त्योहार की खुशी में तो सभी को शामिल होना चाहिए। तुम्हें मालूम है महाराज रणजीत सिंह पंजाब के बड़े नामी राजा थे। उनके दरबार में होली का जो हुड़दंग हुआ, उसे आज तक याद किया जाता है। उसमें अंग्रेज भी शामिल हुए थे। काबुल से आए कई सरदार भी खूब रंगे गए थे।

राकेश : और भक्त प्रह्लाद की कथा भी तो होली से जुड़ी है।

दादाजी : हाँ-हाँ, होली के कितने ही किस्से-कहानियाँ हैं !

रचना : प्रह्लाद की कथा तो मुझे भी मालूम है।

दादाजी : तो तुम हमें भी सुना दो।

रचना : हिरण्यकश्यप नाम का एक राजा था। वह ईश्वर को नहीं मानता था। वह अपनी प्रजा से कहता था कि “मेरी पूजा करो। मेरा ही नाम जपो। भगवान का नाम न लो।” लेकिन उसी का बेटा प्रह्लाद ईश्वर का भक्त था।

राकेश : अच्छा, तो उसने प्रह्लाद को नहीं रोका ?

रचना : हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को ईश्वर की पूजा न करने को कहा। प्रह्लाद ने बात नहीं मानी। तब हिरण्यकश्यप ने उसे कैद खाने में डाल दिया। गर्म खंभे से बँधवा दिया। पहाड़ से गिरा दिया। लेकिन सब कुछ होने पर भी प्रह्लाद का कुछ न बिगड़ा। तब राजा की बहन होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठी। होलिका को वरदान था कि वह आग में जल नहीं सकती। लेकिन यह क्या ! देखते-ही-देखते वह जलकर राख हो गई और प्रह्लाद का कुछ भी न बिगड़ा।

दादाजी : और फिर हुआ यह कि भगवान प्रकट हुए। उन्होंने हिरण्यकश्यप को मार डाला। तभी से होली जलाने का रिवाज़ शुरू हुआ।

राकेश : दादाजी, होली पर गेहूँ की बाल भूनते हैं, सो क्यों ?

रचना : किसान और गाँववाले देखते हैं कि फसल पक गई या नहीं।

दादाजी : हाँ, बालें भूनने का रिवाज़ इसीलिए चला कि देखें - अनाज पक गया या नहीं। इससे पता चलता है कि फसल कैसी हुई। होली जलाते हैं, लोग गले मिलते हैं। गले मिलने से आपस में प्रेम बढ़ता है। दुश्मनी और वैर भाव मिटता है। दूसरे दिन रंग खेलते हैं।



राकेश : लेकिन दादाजी, रंग डालने का फायदा क्या है ?

रचना : कहते हैं कि रंग डालने से कई तरह की बीमारियाँ नहीं होतीं, जैसे दाद-खुजली।

दादाजी : भई, रंग टेसू के फूलों का होना चाहिए। काले-नीले भदे रंग या कीचड़ किसी पर डालना ठीक नहीं। जब चारों ओर प्रकृति में रंग-बिरंगे फूल खिले हों, तब रंग में रंगना कैसा सुहाना मालूम होता है !

(होली गाने और ढोल-डफली बजने के स्वर)

रचना : दादाजी, दादाजी, कहते हैं कि ब्रज की होली तो बड़ी अनोखी होती है।



दादाजी : नंद गाँव में श्रीकृष्ण रहते थे। राधा का गाँव है बरसाना। बरसाने और नंद गाँव के वासी अभी तक आपस में रिश्ता मानते हैं। होली पर नंद गाँव के गोप टोलियाँ बनाकर बरसाने जाते हैं। होली के इन मस्तानों का स्वागत करने के लिए बरसाने की नारियाँ पहले ही तैयार रहती हैं - हाथों में संटियाँ लेकर गोपिकाएँ गोपों पर रंग तो खूब डालती ही है, उनकी पिटाई भी करती हैं। फाग और होली सब मिलकर गाते हैं और नाचते हैं।

राकेश : हाँ दादाजी, मैंने पढ़ा है।

एक बार श्रीकृष्ण गोपिकाओं के बीच जा फँसे। एक ने उनकी बाँसुरी छीनी, दूसरी ने उनके मुँह पर लाल-लाल गुलाल मल डाला, तीसरी ने रंग का घड़ा ही उलट दिया। फिर चौथी गोपी ने आँखें नचाते हुए, खिल्ली उड़ाते हुए कहा -

“लल्ला, फिर आइयो खेलन होरी।”

(दादाजी और दोनों बच्चे ठहाका लगाते हैं। होली के हुड़दंग के स्वर)

**आइए जानें :**

### **प्राकृतिक रंग**

अगर हल्दी और थोड़े से चूने को पानी में डालकर घोला जाए तो लाल रंग तैयार होता है। टेसू के फूलों को पानी में डालकर पीला सुगन्धित रंग तैयार किया जाता है। पुराने जमाने में इसी तरह के प्राकृतिक रंगों से होली खेली जाती थी।

### **फाग**

होली का त्योहार फागुन के महीने में आता है। होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को 'फाग' कहते हैं।

### **ठंडाई**

बादाम, खसखस, सोंफ, काली मिर्च आदि पीसकर मिलाये गये ठंडे दूध को ठंडाई कहते हैं। इस पेय पदार्थ को होली पर विशेष रूप से तैयार किया जाता है।

**ब्रज :** कृष्ण के जन्मस्थान को ब्रज भूमि कहते हैं। वहाँ बोली जाने वाली भाषा ब्रजभाषा कहलाती है।

### **शब्दार्थ :**

गुलाल - लाल रंग का चूर्ण, अनोखा - निराला, हुड़दंग - शोर, रिवाज़ - पद्धति, संटियाँ - पतली लकड़ियाँ, अबीर - पीले रंग का चूर्ण, होरी - होली, खिल्ली उड़ाना - मज़ाक करना

## अभ्यास

### I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) फाँहियान कौन था ?
- २) महाराजा रणजीत सिंह कहाँ का राजा था ?
- ३) होलिका कौन थी ?
- ४) होलिका को क्या वर मिला था ?
- ५) रंग डालने का फायदा क्या है ?

### II. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- १) फाँहियान कौन था ? उसने अपनी किताब में भारत के बारे में क्या लिखा है ?
- २) राजा रणजीत सिंह के दरबार में मनाई गई होली में कौन-कौन शामिल हुए थे ?
- ३) होलिका की मृत्यु कैसे हुई ?
- ४) 'बरसाने' गाँव में गोप और गोपिकाएँ कैसे होली खेलते हैं ?

### III. सही शब्दों को कोष्ठक से चुनकर लिखिए :

(अनोखा, होलिका, फाँहियान, होली जलाने, प्रह्लाद)

- १) ..... चीन देश का यात्री था।
- २) भारत बड़ा ..... देश है।
- ३) हिरण्यकश्यप का बेटा ..... ईश्वर का भक्त था।

४) हिरण्यकश्यप की मृत्यु से ..... का त्योहार शुरू हुआ।

५) प्रह्लाद को गोद में लेकर ..... आग में बैठी।

#### IV. विलोम शब्द लिखिए :

१) फायदा X

२) विदेशी X

३) दुश्मनी X

४) लाभ X

#### V. नमूने के अनुसार जोड़े शब्दों को पाठ से ढूँढ़कर लिखिए :

उदा : गाजे - बाजे

१) ..... - .....

२) ..... - .....

३) ..... - .....

#### VI. निम्नलिखित वाक्यों को किसने किससे कहा ?

१) “भारत बड़ा अनोखा देश है। यहाँ तो लोग आए-दिन नाचते गाते ढोल बजाते हैं।”

२) “रंग डालने का क्या फायदा है ?”

३) “लल्ला, फिर आइयो खेलन होरी।”

#### VII. पाठ में ‘होलिका दहन’ की एक घटना है। उसे सही ढंग से पढ़िए और अपने शब्दों में एक छोटी-सी कहानी के रूप में लिखिए। उस कहानी को एक नया शीर्षक भी दीजिए।

VIII. चित्र देखकर उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए :



.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

योग्यता विस्तार :

- बहन-भाई के अटूट प्रेम का परिचय देनेवाला एक त्योहार है 'राखी'। इस त्योहार की जानकारी प्राप्त कीजिए और लिखिए।



## वैभवशाली हंपी



- संकलित

आशयः प्रस्तुत पाठ में लोकप्रिय पर्यटन स्थल हंपी का वर्णन है। विजयनगर साम्राज्य के वैभव और कला-प्रेम का भी सशक्त चित्रण है। हंपी के महत्वपूर्ण स्थल और उनकी वास्तुकला, शिल्पकला का परिचय कराया गया है।

हंपी कर्नाटक राज्य में स्थित प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। यह बेंगलूरु से लगभग ३५० कि.मी. दूरी पर है। यह कर्नाटक के लोकप्रिय प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। शिल्पकला और वास्तुकला एवं मूर्तिकला की दृष्टि से यह विशिष्ट पर्यटन स्थल है।

हंपी तुंगभद्रा नदी के तट पर है। यहाँ की प्रमुख भाषाएँ कन्नड और तेलुगु हैं। कुछ सदियों पहले हंपी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी था। उस समय यह एक प्रमुख वाणिज्य केंद्र था। तुलुवा राजवंश के राजा कृष्णदेवराय के काल में हंपी विजयनगर साम्राज्य का प्रसिद्ध नगर था। राजा कृष्णदेवराय कला और धर्म के महान संरक्षक थे।

हंपी में देखने लायक अनेक स्थल हैं। उनमें प्रमुख हैं-विट्ठल मंदिर, विरूपाक्ष मंदिर, हेमकूट पर्वत, कडलेकालु गणेश की मूर्ति, सासवेकालु गणेश की मूर्ति, कृष्ण मंदिर, उग्र नरसिंह, कमल महल, हजारामंदिर, अस्तबल आदि।

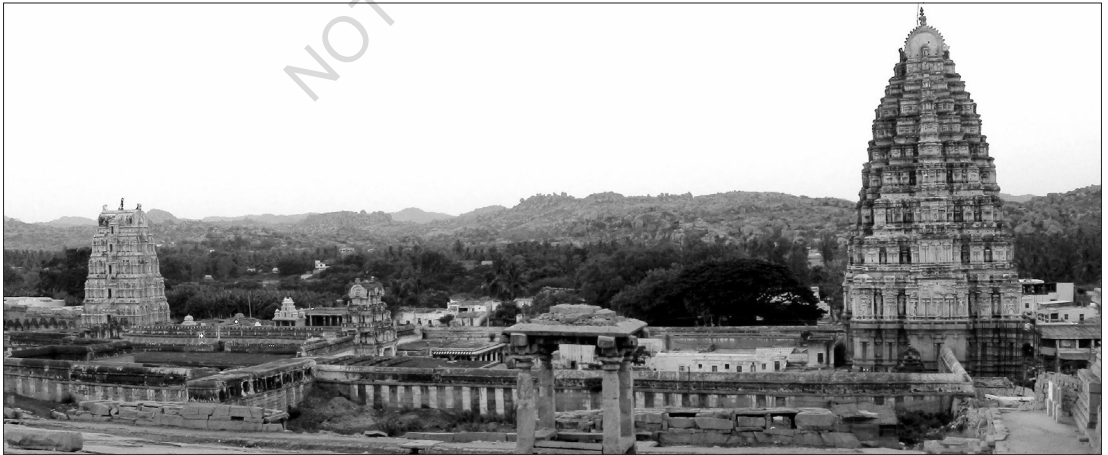
**विट्ठल मंदिर :** इस मंदिर में भगवान विष्णु विट्ठल के रूप में विराजमान हैं। इस मंदिर में कई विशिष्ट स्तंभ हैं। इनमें अद्भुत कलाकारी द्रष्टव्य है। मंदिर के सामने 'संगीत स्तंभ' भी हैं। इन स्तंभों के स्पर्श करने से संगीत के सात स्वर सुनायी देते हैं।



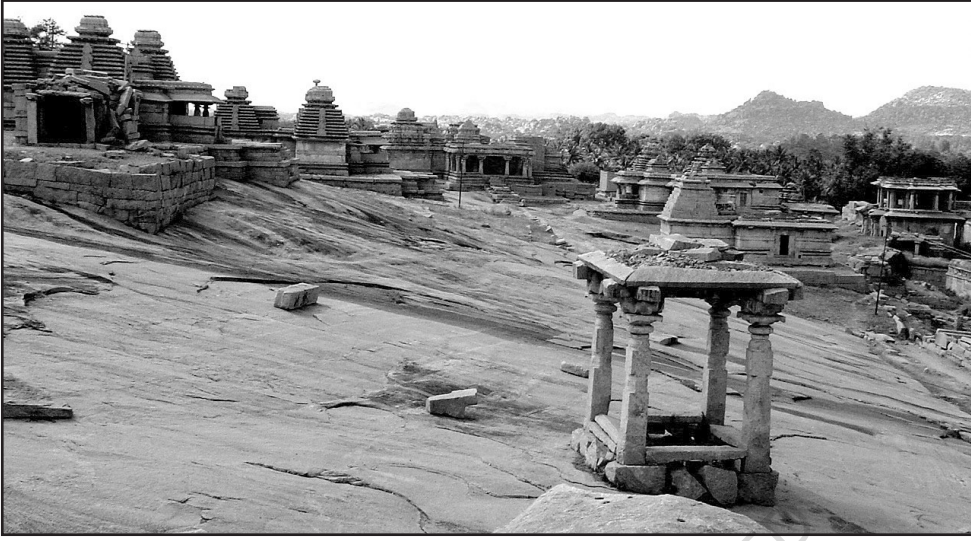
**विट्ठल मंदिर**

**विरूपाक्ष मंदिर :** यह एक विशाल मंदिर है। ई. १५१०

में राजा श्री कृष्णदेवराय के समय में इस मंदिर का निर्माण पूरा हुआ था। इस मंदिर के सामने तुंगभद्रा नदी बहती है। इस मंदिर के दो भव्य शिखर हैं। इसे 'रायल गोपुर' कहते हैं। इसके सामने ध्वजस्तंभ है। विरूपाक्ष को पंपापति भी कहते हैं। इस मंदिर के प्रांगण में पातालेश्वर, मुक्ति नरसिंह, सूर्यनारायण, लक्ष्मीनरसिंह, महिषासुरमर्दिनी, श्री वेंकटेश्वर मंदिर आदि भी हैं।



**विरूपाक्ष मंदिर**



### हेमकूट मंदिर

**हेमकूट मंदिर** : यह हेमकूट पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। यहाँ भी बहुत सारे छोटे-छोटे मंदिर हैं।

**कडलेकालु गणेश** : हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार गणेश भगवान अवरोधों को हटाने के देवता हैं। इनकी मूर्ति यहाँ कडलेकालु (मूँगफली) के आकार में हैं।



### कडलेकालु गणेश

**सासवेकालु गणेश** : भगवान सरसों के बीज के आकार में है। इसलिए इसका नाम सासवेकालु गणेश पड़ा है। कन्नड भाषा में सरसों के बीज को सासवेकालु कहते हैं। यह विजयनगर की कलात्मकता का एक अच्छा उदाहरण है।



### सासवेकालु गणेश

**कृष्ण मंदिर :** यह मंदिर कृष्ण भगवान के लिये समर्पित है। इसकी कलाकारी देखने योग्य है।



**कृष्ण मंदिर**

**उग्र नरसिंह :** यह हंपी का एक मुख्य मंदिर है। इसमें भगवान विष्णु नृसिंह के रूप में शोभायमान हैं।



**उग्र नरसिंह**

**कमल महल :** यह एक सुसज्जित रंग महल है। प्राचीन काल में हर्षोल्लास के लिए इस महल का उपयोग किया जाता था।



**कमल महल**

**हजारा राममंदिर :** यह मंदिर अपनी असाधारण नक्काशीदार दीवारों के लिए प्रसिद्ध है।



**हजारा राममंदिर**

**अस्तबल :** यह हाथियों को बांधने का स्थान था। इसमें हाथियों के लिये कई कक्ष बने हैं। प्रत्येक कक्ष काफी बड़ा है।

सम्राट श्री कृष्णदेवराय का शासनकाल विजयनगर का स्वर्णयुग कहलाता है। उनके काल में सोना, चाँदी, मोती, जवाहरात यहाँ के बाज़ार में बड़ी मात्रा में मिलते थे। उस वैभव की याद में कर्नाटक सरकार नवंबर के प्रथम सप्ताह में 'हंपी उत्सव' मनाती है। यहाँ नृत्य और संगीत के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

जीवन में कम से कम एक बार हंपी जाकर अतीत के उस वैभव के दर्शन करना आवश्यक है।

**शब्दार्थ :**

दर्शनीय - देखने लायक, उपस्थित - मौजूद, हाज़िर; सुसज्जित - अच्छी तरह सजाया हुआ, आयोजन - व्यवस्था

**टिप्पणी :** हिंदी में 'ळ' वर्ण नहीं है। यह कन्नड भाषा का वर्ण है। इसलिए 'काळु' की जगह 'कालु' का प्रयोग हुआ है।

### अभ्यास

**I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:**

- १) हंपी कहाँ है?
- २) हंपी किस नदी के तट पर स्थित है ?
- ३) हंपी किसकी राजधानी था?
- ४) तुलुवा राजवंश के राजा कौन थे?
- ५) 'संगीत स्तंभ' कहाँ उपस्थित हैं ?
- ६) विरूपाक्ष का दूसरा नाम क्या है?
- ७) 'सासवेकालु गणेश' किसे कहते हैं?

८) अस्तबल क्या है ?

९) हजारा राममंदिर किसके लिए प्रसिद्ध है?

१०) 'हंपी उत्सव' कब मनाते हैं?

## II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१) हंपी किसके लिए प्रसिद्ध है?

२) हंपी में देखने लायक स्थलों के नाम लिखकर उनका महत्व समझाइए ।

३) कृष्णदेवराय के शासनकाल को 'विजयनगर का स्वर्णयुग' क्यों कहते हैं?

४) सासवेकालु गणेश और कडलेकालु गणेश के बारे में दो-दो वाक्य लिखिए।

## III. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

(पंपापति, तुलुवा, कमल महल, सरसों का बीज, स्वर्णयुग)

१) राजा कृष्णदेवराय \_\_\_\_\_ वंश के थे।

२) विरूपाक्ष को \_\_\_\_\_ भी कहते हैं।

३) सासवेकालु का अर्थ \_\_\_\_\_ है।

४) हर्षोल्लास का महल \_\_\_\_\_ है।

५) सम्राट श्री कृष्णदेवराय के शासनकाल को \_\_\_\_\_ कहते हैं।

#### IV. शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए :

उदाहरण :

दर्शनीय - दर्शन + ईय

परिश्रमी - परिश्रम + ई

१. राष्ट्रीय -

१. ईमानदारी -

२. अनुकरणीय -

२. साहसी -

३. मानवीय -

३. जापानी -

४. भारतीय -

४. कलाकारी -

#### V. नमूने के अनुसार विलोम शब्द जोड़िए :

१) धर्म निरूपयोग

२) अच्छा असाधारण

३) योग्य अधर्म

४) साधारण बुरा

५) उपयोग अयोग्य

#### VI. इन वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :

उदाहरण : जैसे पहले न हुआ हो - अपूर्व

१. जो दर्शन करने योग्य हो -

२. जो प्रशंसा के योग्य हो -

३. जो पुराने समय का हो -

४. जो मामूली न हो -

५. जो रक्षा करता हो -

**VII. शब्द समूहों में उदाहरण की तरह बेमेल शब्दों पर गोल चिह्न लगाइए :**

उदाहरण : मंदिर

बगीचा

मूर्ति

घंटा

१. विट्ठल

विरूपाक्ष

विष्णु

शारदा

२. कन्नड

तमिल

तेलुगु

गेंद

३. बेलूरु

हलेबीडु

महाराष्ट्र

हंपी

४. पत्थर

सोना

चाँदी

मोती

**VIII. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

१. प्रमुख

-

२. उपस्थित

-

३. प्रसिद्ध

-

४. आश्रय

-

**योग्यता विस्तार :**

- मैसूरु, बेलूरु, हलेबीडु या अन्य किसी एक दर्शनीय स्थल के बारे में दस वाक्य लिखिए।
- श्रवणबेलगोल के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।





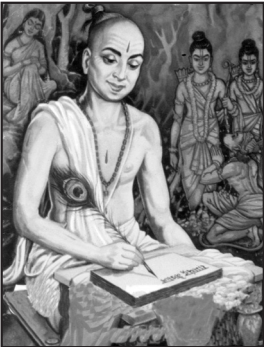
## तुलसी के दोहे

आशय: इन दोहों के द्वारा परहित, स्नेह, धैर्य, मधुर वचन, दया का महत्व आदि के परिणामों की जानकारी दी जा रही है।

१. तुलसी संत सुअम्ब तरु, फूलि फलहिं परहेत।  
इतते ऐ पाहन हनत, उतते वे फल देत॥
२. आवत ही हरषै नहिं, नैनन नहिं सनेह।  
तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह॥
३. सूर समर करनी तुलसी करहिं, कहिं न जनावहिं आप।  
विद्यमान रिपु पाइ रन, कायर करहिं, प्रलाप॥
४. तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।  
बसीकरन यह मंत्र है, परिहरु वचन कठोर॥
५. दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।  
तुलसी दया न छाँड़िए, जब लौ घट में प्राण॥

कवि परिचय :

गोस्वामी तुलसीदास : (सन् १५३२ - सन् १६२३)



गोस्वामी तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का तुलसी था। वे अपने समय के पहुँचे हुए विद्वान तथा महान संत थे। वे श्रीराम के अनन्य भक्त थे। उसी भक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना की। इस

ग्रंथ ने गोस्वामी जी को अमर बना दिया। विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, पार्वती मंगल आदि उनके अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

### शब्दार्थ :

सुअम्ब तरु - श्रेष्ठ आम पेड़, परहेत - दूसरों के लिए, पाहन हनत - पत्थर मारते हैं, आवत ही - आते ही, नैनन - आँखें, मेह - मेघ, कंचन - सोना, समर - युद्ध, रिपु - दुश्मन, जनावहिं - बताते हैं, विद्यमान - मौजूद, उपजत - पैदा होता है, बसीकरन - दूसरों को वश में करना, परिहरु - छोड़ दे, त्याग दे; छाँड़िए-छोड़िए, लौ - तक, घट - शरीर

### भावार्थ

१. तुलसी जी कहते हैं कि, संत हमेशा आम के वृक्ष की तरह होते हैं। आम के वृक्ष में जो फल और फूल उगते हैं, वे दूसरों के लिए होते हैं। इस वृक्ष पर जितना पत्थर मारते हैं वह उतना फल देता है। यानि कि स्वयं कष्ट सहता है और बदले में फल (सुख) देता है। इसी तरह संत भी परोपकारी होते हैं।
२. तुलसीदास जी कहते हैं कि जहाँ जाते ही लोग हमें देखकर खुश नहीं होते और उनकी आँखों में प्रेम और विश्वास नहीं झलकता, ऐसे स्थान पर नहीं जाना चाहिए, चाहे वहाँ सोने की वर्षा ही क्यों न होती हो।
३. तुलसीदास जी वीर और कायरों के गुणों को दर्शाते हुए कहते हैं कि वीर अपने मुँह से अपना बखान नहीं करते हैं। युद्ध में डटकर शत्रुओं का सामना करते हैं। उल्टे कायर युद्ध-क्षेत्र में शत्रुओं को देखते ही रो पड़ते हैं।

४. तुलसी जी कहते हैं कि मीठे वचन के प्रयोग से चारों ओर का वातावरण सुखमय बनता है। मीठा वचन वशीकरण मंत्र है। अतः कठोर वचन को त्याग देना चाहिए।
५. तुलसीदास जी कहते हैं कि धर्म का मूल दया है और पाप का मूल अहंकार । उनका कहना है कि जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक हमारे मन में दया की भावना होनी चाहिए।

### अभ्यास

#### I. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- १) संत का स्वभाव कैसे होता है ?
- २) सच्चे शूर-वीर के क्या लक्षण होते हैं ?
- ३) दुश्मन की फौज देखकर वीर क्या करने लगते हैं?
- ४) मीठे वचन बोलने से क्या लाभ है?
- ५) हमें कैसे वचन त्यागना चाहिए?
- ६) तुलसीदास जी 'दया' के बारे में क्या कह रहे हैं?

#### II. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है :

- १) आम का पेड़ दूसरों के लिए ही फूलता और फलता है।
- २) सच्चा शूर - वीर कभी अपने मुँह से अपनी बड़ाई नहीं करता।
- ३) दुश्मन की फौज को देखकर कायर रोने-पीटने लगता है।
- ४) मीठे वचन बोलने से चारों ओर खुशी का वातावरण उत्पन्न हो जाता है।
- ५) अभिमान पाप का मूल है और दया धर्म का।

### III. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

- १) आवत ही हरषै नहिं, नैनन नहिं सनेह।
- २) सूर समर करनी तुलसी करहिं, कहिं न जनावहिं आप।
- ३) बसीकरन यह मंत्र है, परिहरु वचन कठोर।

### IV. नमूने के अनुसार निम्नलिखित शब्दों का प्रचलित खड़ीबोली रूप लिखिए :

| इतते - यहाँ से | ते - से      |
|----------------|--------------|
| १. उतते -      | ५. करहिं -   |
| २. चहुँ -      | ६. छाँड़िए - |
| ३. तहाँ -      | ७. लौ -      |
| ४. कहिं -      |              |

### V. विलोम शब्द लिखिए :

|           |           |             |
|-----------|-----------|-------------|
| १. इतते X | ४. मीठा X | ७. धर्म X   |
| २. आवत X  | ५. सुख X  | ८. अभिमान X |
| ३. कायर X | ६. कठोर X | ९. दया X    |

### VI. दोहा जो आपको बहुत अच्छा लगा हो, उसे भावार्थ सहित कक्षा में सुनाइए।

### VII. दोहों में निहित किन बातों को आप अपने जीवन में लागू करना चाहते हैं, उन्हें तीन-चार वाक्यों में लिखिए।

### VIII. दोहों को कंठस्थ कीजिए।

#### योग्यता विस्तार :

- मीठे वचन बोलने से चारों ओर सुख फैलता है। कैसे? कुछ उदाहरण देते हुए कक्षा में इसकी चर्चा कीजिए।

